International Journal in Management and Social Science
Volume 10 Issue 01, January 2022 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

भक्तिकाव्य और उसके साहित्यिक योगदान

डॉ. सुनीता सैनी

सह आचार्य - हिंदी

राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राजस्थान)

सारांश

भक्तिकाव्य भारतीय साहित्य का एक अभूतपूर्व और महत्वपूर्ण अंग है, जो न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि साहित्यिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी इसका अत्यधिक योगदान रहा है। भक्तिकाव्य का उदय मध्यकाल में हुआ, जब भारतीय समाज में सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक असमानताएँ व्याप्त थीं। इस आंदोलन ने साहित्य के माध्यम से ईश्वर के प्रति प्रेम, समर्पण और श्रद्धा की नई परिभाषाएँ स्थापित कीं। भक्तिकाव्य ने एक नई साहित्यिक धारा को जन्म दिया, जो न केवल सामान्य जन को ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति का मार्गदर्शन करती थी, बल्कि समाज में व्याप्त कुरीतियों और आडंबरों के खिलाफ भी आवाज उठाती थी।

इस शोधपत्र में हम भक्तिकाव्य के महत्व, इसके साहित्यिक योगदान, प्रमुख भक्त कवियों और उनके कार्यों, तथा इस साहित्यिक धारा के समाज पर प्रभाव की चर्चा करेंगे। यह अध्ययन यह भी बताएगा कि भक्तिकाव्य ने भारतीय समाज के सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार नए विचारों और दृष्टिकोणों का समावेश किया। इस आंदोलन के कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से समाज के आदर्शों, नैतिकता, प्रेम और समर्पण की छवियाँ प्रस्तुत की हैं।

मुख्य शब्द: भक्तिकाव्य, साहित्यिक योगदान, भारतीय समाज, भक्ति आंदोलन, भक्त कवि, धार्मिक साहित्य, कृष्ण भक्ति, राम भक्ति

1. प्रस्तावना

भक्तिकाव्य भारतीय साहित्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और समृद्ध धारा है, जिसका प्रभाव न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रहा है, बल्कि साहित्यिक दृष्टिकोण से भी इसका योगदान अभूतपूर्व है। भक्तिकाव्य का उदय मध्यकाल में हुआ, जब समाज में धार्मिक असमानताएँ, जातिवाद और सामाजिक असमानताएँ व्याप्त थीं। यह आंदोलन समाज के भीतर व्याप्त पाखंड और आडंबर के खिलाफ था, और इसका मुख्य उद्देश्य भगवान के प्रति एक सच्चे और निष्कलंक प्रेम की भावना को प्रकट करना था। इस साहित्यिक धारा ने न केवल भक्तों को एक व्यक्तिगत ईश्वर से जोड़ने का काम किया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों का भी आह्वान किया।

भक्तिकाव्य का महत्व इस बात में है कि यह भारतीय समाज में समरसता, प्रेम, और भाईचारे की भावना को फैलाने का एक सशक्त माध्यम बना। जब भारतीय समाज में धर्म और जाति के आधार पर गहरी दरारें थीं, तब भक्तिकाव्य ने बिना किसी भेदभाव के ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति को प्रस्तुत किया। इसने यह संदेश दिया कि ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध केवल भक्ति और समर्पण से संभव है, न कि बाहरी धार्मिक कर्मकांडों या पंथों के माध्यम से।

भक्तिकाव्य में कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रेम, समर्पण, और समाजिक समानता के सिद्धांतों को प्रकट किया। इसने न केवल धार्मिक रूप से, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी भारतीय साहित्य

को एक नया आयाम दिया। इसके अलावा, भक्तिकाव्य की काव्य शैलियाँ और उनकी भाषा ने भारतीय साहित्य में एक नई दिशा दी, जो आज भी साहित्य और समाज पर गहरा प्रभाव डालती है।

भक्तिकाव्य के कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं में कविता को एक सशक्त माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया, जो न केवल समाज की वर्तमान समस्याओं को उजागर करती थीं, बल्कि एक आदर्श समाज की कल्पना भी प्रस्तुत करती थीं। इस साहित्यिक धारा के कवियों का उद्देश्य न केवल ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति को प्रकट करना था, बल्कि उन्होंने समाज के भीतर व्याप्त असमानताओं, अंधविश्वासों, और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ भी सशक्त विचार व्यक्त किए।

इस शोधपत्र में हम भक्तिकाव्य के महत्व और उसके साहित्यिक योगदान पर विस्तार से चर्चा करेंगे। हम यह समझेंगे कि कैसे भक्तिकाव्य ने साहित्य, समाज और संस्कृति में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया और किस प्रकार भक्त कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को एक नई दिशा दी। यह अध्ययन भक्तिकाव्य के माध्यम से साहित्य में किए गए सामाजिक और धार्मिक सुधारों, उसकी शैली और भाषा के महत्व को भी स्पष्ट करेगा। साथ ही, यह भी देखा जाएगा कि भक्तिकाव्य ने भारतीय समाज में एकता, भाईचारे, और नैतिक मूल्यों को कैसे बढ़ावा दिया।

इस शोध का उद्देश्य भक्तिकाव्य को केवल धार्मिक साहित्य के रूप में नहीं, बल्कि एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत करना है, जिसने समाज में व्याप्त असमानताओं को चुनौती दी और लोगों को धर्म, जाति और पंथ के भेद से परे जाकर मानवता के मूल्यों की ओर अग्रसर किया।

2. भक्तिकाव्य का उत्पत्ति और विकास

भक्तिकाव्य का आरंभ लगभग 12वीं से 17वीं शताब्दी के बीच हुआ था। यह वह समय था जब भारतीय

समाज में जातिवाद, धार्मिक असमानताएँ, और आडंबर से भरे हुए धार्मिक रीतिरिवाजों का प्रभुत्व था। भक्तिकाव्य के कवियों ने ईश्वर के प्रति समर्पण और प्रेम को एक ऐसा साधन बनाया, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आप को सुधार सकता था और समाज में व्याप्त कुरीतियों से उबर सकता था।

भक्ति आंदोलन ने न केवल पंथ और धर्म के बजाय व्यक्तिगत भक्ति पर जोर दिया, बल्कि यह भी बताया कि ईश्वर से संबंध किसी विशेष जाति, पंथ या धार्मिक परंपरा से बंधा नहीं है। इस दृष्टिकोण ने सामाजिक समानता की अवधारणा को बढ़ावा दिया और भारतीय समाज में जातिवाद, भेदभाव और धार्मिक विभाजन को चुनौती दी। भक्तिकाव्य की शुरुआत दक्षिण भारत में हुई, जहां 'संत तिरुवल्लुवर' और 'आलवार' कवियों ने ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति का उद्घाटन किया। इसके बाद मध्य भारत में रामानंद, कबीर, सूरदास, मीरा बाई, और तुलसीदास जैसे महान कवियों ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया।

इन कवियों की रचनाएँ समाज में आदर्शों, नैतिकता और धार्मिक एकता का संवेदनशील और प्रभावी प्रचार करती थीं। भक्तिकाव्य ने एक नया साहित्यिक रूप दिया, जिसमें ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा, और समर्पण का चित्रण किया गया। इस काव्य धारा ने साहित्य को न केवल धार्मिक उद्देश्य के लिए, बल्कि समाज के सुधार के लिए भी एक शक्तिशाली माध्यम बना दिया।

3. प्रमुख भक्त कवि और उनके योगदान

भक्तिकाव्य में कई महान कवियों ने अपनी रचनाओं से न केवल धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया, बल्कि उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रभाव डाला। ये कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के आंतरिक कष्टों और असमानताओं के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे। निम्नलिखित प्रमुख भक्त कवियों और उनके योगदानों पर चर्चा की जाएगी:

- **रामानंद**: रामानंद भारतीय भक्ति आंदोलन के एक महान संत कवि थे, जिन्होंने राम भक्ति को प्रचारित किया। वे पहले संत थे जिन्होंने राम के नाम को सामान्य जन तक पहुँचाया और समाज में धर्म और जाति के आधार पर भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई। उनके योगदान से राम की भक्ति एक व्यापक सामाजिक आंदोलन बन गई।

- **कबीर**: कबीर ने समाज में व्याप्त पाखंड, धार्मिक आडंबर और भेदभाव के खिलाफ काव्य रचनाएँ कीं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह संदेश दिया कि ईश्वर एक है, और उसका वास्तविक रूप प्रेम, विश्वास और समर्पण में है, न कि बाहरी रीति-रिवाजों में। कबीर की रचनाएँ आज भी भारतीय समाज में गहरी छाप छोड़ती हैं और उन्होंने समाज को एकता और प्रेम का संदेश दिया।

- **मीरा बाई**: मीरा बाई ने कृष्ण भक्ति को अपने काव्य का मुख्य विषय बनाया। उनकी रचनाएँ कृष्ण के प्रति उनके अनन्य प्रेम और समर्पण का उद्घाटन करती हैं। मीरा बाई ने भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति को भी उठाया और यह साबित किया कि भक्ति किसी भी जाति, धर्म, या लिंग के बंधनों से परे है।

- **तुलसीदास**: तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की, जो भक्तिकाव्य का प्रमुख उदाहरण मानी जाती है। तुलसीदास ने राम के जीवन को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत किया और उनके माध्यम से समाज में धर्म, नैतिकता और आदर्श की स्थापना की। उनके काव्य ने न केवल राम की भक्ति को महत्व दिया, बल्कि समाज में सत्य, न्याय और सदाचार के सिद्धांतों को भी प्रबल किया।

- **सूरदास**: सूरदास ने कृष्ण के बचपन, उनकी लीलाओं और उनके प्रति भक्तों के प्रेम को अपने काव्य का मुख्य विषय बनाया। सूरदास की कविताएँ आज भी भारतीय साहित्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती हैं, क्योंकि वे कृष्ण के साथ अनन्य प्रेम और समर्पण का चित्रण करती हैं।

4. भक्तिकाव्य की साहित्यिक शैलियाँ और भाषा

भक्तिकाव्य में कवियों ने लोकभाषाओं का प्रयोग किया, जिससे उनकी रचनाएँ सामान्य जनता तक पहुँच सकें। प्रमुख रूप से हिंदी, ब्रज, अवधी और राजस्थानी भाषाओं का प्रयोग किया गया। इसने भक्तिकाव्य को व्यापक रूप से लोकप्रिय बनाया और समाज के हर वर्ग के लिए इसे सुलभ किया।

भक्तिकाव्य की शैलियाँ भी विविध थीं। कवि अपनी रचनाओं में काव्यशास्त्र के नियमों का पालन करते हुए आस्थाओं और धर्म के महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रकट करते थे। इस साहित्यिक धारा में पद, कविता, गीत, राग, और भक्ति की अन्य शैलियों का व्यापक उपयोग हुआ। भक्तिकाव्य में शब्दों का चयन और शैली इतनी प्रभावी थी कि वह न केवल धार्मिक भावना को प्रस्तुत करती थी, बल्कि समाज के हर वर्ग के दिल को छू जाती थी।

कवियों ने धार्मिक सत्य, प्रेम, और समर्पण की भावना को व्यक्त करने के लिए सरल, सशक्त और चित्ताकर्षक भाषा का प्रयोग किया। इस प्रकार की भाषा ने लोकभाषाओं की अहमियत को बढ़ाया और साहित्य को जनसाधारण तक पहुँचाया।

5. भक्तिकाव्य का समाज पर प्रभाव

भक्तिकाव्य ने भारतीय समाज में गहरे बदलाव किए। इसने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच भेदभाव को समाप्त करने का कार्य किया। भक्ति आंदोलन ने यह स्पष्ट किया कि भक्ति और ईश्वर से प्रेम का संबंध

जाति, धर्म, और पंथ से परे होता है। इसने समाज के सभी वर्गों को एक समान माना और उन्हें ईश्वर की उपासना के लिए प्रेरित किया।

भक्तिकाव्य ने महिलाओं की स्थिति को भी सुधारने की दिशा में योगदान किया। मीरा बाई, जिनकी रचनाओं में कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम और समर्पण था, ने यह दिखाया कि महिला भी भक्ति में पुरुषों के समान अधिकार रखती है। इस प्रकार भक्तिकाव्य ने न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक रूप से भी कई सकारात्मक बदलाव किए।

भक्तिकाव्य ने न केवल समाज में धार्मिक समानता की भावना पैदा की, बल्कि यह आम आदमी के जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण और नैतिकता को प्रोत्साहित करता है।

6. निष्कर्ष

भक्तिकाव्य भारतीय साहित्य के इतिहास में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसने न केवल धार्मिक विचारधाराओं को प्रस्तुत किया, बल्कि समाज में सुधार और सामाजिक समानता की भावना को भी प्रोत्साहित किया। भक्तिकाव्य का साहित्यिक योगदान अमूल्य है, क्योंकि इसने न केवल काव्य शास्त्र को नया रूप दिया, बल्कि भारतीय समाज के आंतरिक विचारों और आस्थाओं में भी बदलाव लाया। भक्त कवियों की रचनाएँ आज भी समाज में प्रासंगिक हैं और उन्होंने भारतीय साहित्य को एक नई दिशा दी है।

इस शोधपत्र से यह स्पष्ट होता है कि भक्तिकाव्य न केवल धार्मिक साहित्य का हिस्सा है, बल्कि यह समाज के हर वर्ग को प्रभावित करने और बदलने का एक सशक्त माध्यम भी है।

संदर्भ

1. शर्मा, रामनिवास. (2015). "भक्तिकाव्य का समाज पर प्रभाव". दिल्ली: हिंदी साहित्य अकादमी।

2. पांडेय, रामधन. (2010). "भक्ति साहित्य और समाज". इलाहाबाद: वाणी प्रकाशन।
3. त्रिवेदी, महेश्वर. (2009). "भक्तिकाव्य में भक्त की भूमिका". वाराणसी: साहित्य संस्थान।
4. यादव, राजेंद्र. (2012). "भक्तिकाव्य का साहित्यिक इतिहास". जयपुर: शिखर प्रकाशन।
5. श्रीवास्तव, सुमित्रा. (2014). "भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य". लखनऊ: साहित्य परिषद।
6. वर्मा, कृष्णा. (2013). "भक्तिकाव्य: एक साहित्यिक दृष्टिकोण". दिल्ली: साहित्य प्रकाशन।
7. मिश्र, शंकर. (2017). "हिंदी भक्तिकाव्य और उसकी समकालीनता". इलाहाबाद: भारतीय साहित्य मंच।
8. तिवारी, हरि राम. (2011). "रामकाव्य और भक्तिकाव्य". वाराणसी: साहित्य वर्धन।
9. सिंह, मदनलाल. (2016). "मीरा बाई और कृष्ण भक्ति". जयपुर: साहित्य बोध।
10. वर्मा, अवधेश. (2018). "तुलसीदास और भक्तिकाव्य का प्रभाव". लखनऊ: लोक साहित्य संस्थान।
11. चतुर्वेदी, माधव. (2012). "भक्ति और साहित्य का समागम". पटना: संस्कृति प्रकाशन।
12. शुक्ल, सौरभ. (2015). "कबीर और उनके काव्य का साहित्यिक मूल्य". दिल्ली: समर्पण प्रकाशन।
13. रावत, विजय. (2014). "भक्तिकाव्य और समाज में नैतिकता का निर्माण". देहरादून: प्रगति प्रकाशन।
14. झा, राजीव. (2016). "हिंदी भक्तिकाव्य और उसकी शैलियाँ". पटना: साहित्य अध्ययन केंद्र।
15. शाह, देवेंद्र. (2019). "भक्तिकाव्य और भारतीय समाज का पुनर्निर्माण". कोलकाता: साहित्य जीवन।